न्याय दर्शन में ईश्वर

न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। वह ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। नैयायिकों के अनुसार ईश्वर विश्व का निमित्तकारण है, न कि उपादानकारण। यह अणुओं से विश्व का निर्माण करता है। अर्थात् वह विश्व की सृष्टि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि के परमाणुओं तथा आकाश, दिक्, काल, मन तथा आत्माओं के द्वारा करता है। यद्यपि ईश्वर विश्व की सृष्टि अनेक द्रव्यों के माध्यम से करता है फिर भी ईश्वर की शक्ति सीमित नहीं हो पाती। ये द्रव्य ईश्वर की शक्ति को सीमित नहीं करते, क्योंकि ईश्वर और इन द्रव्यों के बीच आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है।

न्याय ने ईश्वर को एक आत्मा कहा है जो चैतन्य से युक्त है। यह आत्मा दो प्रकार की होती है – जीवात्मा एवं परमात्मा। यहाँ पर परमात्मा ही ईश्वर है। ईश्वर जीवात्मा से पूर्णतः भिन्न है। ईश्वर नित्य है। वह नित्य ज्ञान के द्वारा सभी विषयों का अपरोक्ष ज्ञान रखता है।

इस प्रकार से न्याय दर्शन के अनुसार ईश्वर नित्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, धर्म व्यवस्थापक, कर्मफलदाता तथा सृष्टि का रचयिता, पालकर्ता एवं संहर्ता है। वह विश्वकर्मा है। जिस प्रकार मिट्टी के घड़े का नाश होता है उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है। ईश्वर की कृपा से ही मानव मोक्ष को अपनाने में सफल होता है तथा इसकी कृपा द्वारा ही तत्व ज्ञान प्राप्त होता है।

न्याय ईश्वर को अनंत मानता है। वह अनंत गुणों से युक्त है, जिसमें छः (6) गुण अत्यधिक प्रधान हैं। इन गुणों को 'षडैश्वर्य' कहा जाता है। वे हैं – आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य।

ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण

- ईश्वर के अस्तित्व के लिए नैयायिकों ने कई युक्तियों का सहारा लिया है। उदयन ने इस संबंध में निम्नलिखित प्रमाण सूत्र रूप में बताया है –

"कार्यायोजन धृत्यादेः पदार्थ प्रत्ययतः श्रुतेः।
वाक्यात् सांख्याविशेषाच्च साध्यो विश्वविदव्ययः"॥
(→ न्यायकुसुमांजलि, 5/1)

अर्थात् "कार्य, आयोजन, धृति, पाद, प्रत्यय, श्रुति (वेद), वाक्य, संख्या, विशेष आदि अनुमानों के द्वारा विश्वविद् (विश्व को जानने वाला) अव्यय रूप ईश्वर की सिद्धि होती है"।

कार्यात् → कार्य-कारण नियमानुसार प्रत्येक घटना या कार्य का एक कारण अवश्य होता है और यह कारण ईश्वर है। जगत एक कार्य है। इसका निमित्त कारण ईश्वर है, जो परमाणुओं से इस कार्यरूपी जगत (विश्व) की रचना करता है।

आयोजनात् → आयोजन शब्द का अर्थ है - संयोग। सृष्टि के प्रारंभ में दो परमाणुओं के संयोग से द्वयणुक की उत्पत्ति होती है। जब तक संयोग नहीं होगा तब तक असमवायी कारण के अभाव में द्वयणुक की उत्पत्ति नहीं होगी। अतः संयोग अपेक्षित है। इस प्रकार से अचेतन परमाणु स्वतः क्रियाशील नहीं हो सकते। परमाणुओं की सक्रियता और परस्पर संयोग का कारण सर्व-शक्तिमान ईश्वर ही है।

धृत्यादेः → धृत्यादेः शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - धृति + पद। धृति से तात्पर्य है - 'धारण' और पद से तात्पर्य है - व्यवहार। अर्थात् इस जगत को धारण करने वाला और संहारक ईश्वर ही है। ईश्वर के संकल्प मात्र से ही संसार की उत्पत्ति और संहार होता है।

पदार्थ → पदार्थ से आशय है, जिसका नामकरण हो सके। लोगों में कला-कौशल और निपुणताएँ देखी जाती हैं। ये शिक्षण द्वारा अर्जित किए जाते हैं तथा इनका (पदार्थों) ज्ञान हमें हो पाता है। वह शिक्षक है - गुरुणांगुरु अर्थात् वह प्रथम शिक्षक ईश्वर है।

वाक्यार्थ → "वेदः पौरुषेयः वाक्यत्वात् भारतादिवत्"। अर्थात् वेद (श्रुति) निर्माण कर्त्ता-पुरुष विशेष के रूप में ईश्वर सिद्ध होता है। जैसे- महाभारतादि ग्रन्थ को वाक्यात्मक होने से पौरुषेय माना जाता है, इसी प्रकार वाक्यात्मक वेद भी पौरुषेय हैं। इस वेद का कर्त्ता वही हो सकता है जो सर्वज्ञ है।

संख्या विशेष → परमाणु भिन्न-भिन्न संख्या में संयुक्त होकर सृष्टि की विविधताओं का सृजन करते हैं। इस समय परमाणुओं की मात्रात्मक और संख्यात्मक उपयुक्तता का ज्ञान केवल ईश्वर को रहता है।

अदृष्ट → पुण्य और पाप के पुंज (समूह) को 'अदृष्ट' कहते हैं। जीवात्मा अपने अदृष्ट के अनुसार अच्छे और बुरे कर्मों का फल भोगता है। चूंकि अदृश्य अचेतन है, अतः वह अपने आप कुछ नहीं कर सकता। जीवों को उनके अदृष्टानुसार कर्मफल देने वाला ईश्वर ही है।

समीक्षा → ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए न्याय दर्शन द्वारा दी गई उपरोक्त युक्तियों की आलोचना की गई है। क्योंकि व्यावहारिक जगत के रूपकों के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया जा सकता। किसी विशेष कार्य का कर्त्ता जरूर होता है लेकिन जगत को कार्य मानकर ईश्वर को उसका निमित्त कारण नहीं माना जा सकता है। ईश्वर का अस्तित्व वैदिक कथन पर आधृत है जो अन्योन्याश्रय दोष है। इसी प्रकार ईश्वर और विश्व की परमाणविक संरचना को एक साथ स्वीकार नहीं किया जा सकता। परंतु नैयायिकों ने इन सभी का उत्तर बड़ी सहजता पूर्वक देने का प्रयास किया है और ईश्वर की सत्ता को सिद्ध किया है।